12 विक्रमशिला

यह निबंध बौद्धकालीन शिक्षा केन्द्र विक्रमशिला विश्वविद्यालय के गौरवशाली अतीत से परिचय कराता है। इस अध्याय में प्राचीन ज्ञान परम्परा की अनेक विशिष्टताओं का उद्घाटन किया गया है।

NQDQPI

मैं विक्रमशिला हूँ। मुझे भारत की अस्मिता का अभेद्य कवच माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मेरा अतीत आज के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से कहीं अधिक उन्नत और महत्त्वपूर्ण था। मेरे यहाँ आर्यभट और अतिश दीपंकर सरीखे विद्वान हुए जिनके योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। खगोल विद्या के क्षेत्र में आर्यभट विश्व प्रसिद्ध हैं जबकि अतिश दीपंकर ने तिब्बत में बौद्ध-धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लामा संप्रदाय की शुरुआत की।

आधुनिक भागलपुर जिला जो प्राचीन अंग महाजनपद नाम से लोकप्रिय है, के कहलगांव थाना क्षेत्र, पोस्ट पथरघट्टा के एक छोटे से गाँव अंतीचक में आठवीं शताब्दी के मध्य मेरा आविर्भाव पालवंश के सर्वाधिक प्रतापी राजा धर्मपाल के संरक्षण में हुआ। धीरे-धीरे मैं अपनी बौद्धिक शक्ति के ही बदौलत अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर छा गया।

अपने आचार्यों के विक्रमपूर्ण आचरण, उनकी अखंड शील सम्पन्नता के कारण ही मैं विक्रमशिला की संज्ञा से संबोधित हुआ। किंवदंति है कि विक्रम नामक यक्ष को दमित कर इस स्थान पर विहार बनाने के कारण मेरा नाम विक्रमशिला पड़ा।

मेरे प्रांगण में छह महाविद्यालय विद्यमान थे, जहाँ अलग-अलग 'द्वारपण्डित' नियुक्त किए गए थे। द्वारपण्डितों के समक्ष मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले छात्र ही मेरे प्रांगण में

प्रवेश पा सकते थे। द्वारपण्डित आचार्य ज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे तंत्र, योग, न्याय, काव्य और व्याकरण में पारंगत थे। केन्द्रीय महाविद्यालय के द्वारपण्डितों को मेरे आधार स्तंभ की श्रेणी में रखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि हरिभद्र मेरे प्रथम आचार्य-कुलपति थे। नालंदा विश्वविद्यालय के आचार्य शांतिरक्षित के शिष्य होने के नाते कहीं-कहीं हरिभद्र को शांतिभद्र भी कहा गया है।

मेरे पास एक समृद्ध पुस्तकालय था। तंत्रविद्या एवं तर्कविद्या सहित प्रारंभिक दर्शन और बौद्ध दर्शन से संबंधित ग्रंथों का यहाँ विशाल संग्रह मौजूद था। यहाँ की पाण्डुलिपियों को तैयार करने के लिए आचार्य और शोधार्थी दोनों अधिकृत थे। राजा गोपाल द्वितीय के शासन के पन्द्रहवें वर्ष में प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टशाहस्रिका-प्रज्ञापारमिता' की पाण्डुलिपि मेरे घर ही तैयार की गयी थी। यह ग्रंथ आज भी ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन की धरोहरों में शामिल है।

दान, शील, धैर्य, वीर्य, ध्यान और प्रज्ञापारमिता के प्रमुख अंग थे, जिनमें पारंगत होना मेरे उद्देश्यों में शामिल था। उपाय कौशल्य, प्राणिधान, बल एवं ज्ञान को मिलाकर कुल 10 पारमिताओं में पारंगत होना अपने आप में साधारण बात नहीं थी । यह मनुष्य को पूर्ण महामानव बनाने की प्रक्रिया है, जो मेरी गरिमा की चरम परिणति है।

दसवीं-ग्यारहवीं सदी तक मैं पूर्वी एशिया का एक उत्कृष्ट शिक्षा-केन्द्र बन चुका था। सम्यक ज्ञान-दान परम्परा में मेरा कोई सानी नहीं था। मेरे प्रांगण-प्रवेश में प्राथमिकता वैसे विद्यार्थियों को ही दी जाती थी जो मेरे यहाँ पूरे सत्र में नियमित उच्च शिक्षा व शोधकार्यों के आकांक्षी होते थे। प्रत्येक नवागत विद्यार्थी को कुछ समय के लिए 'भिक्षु-वर्ग' में रहना पड़ता था। फिर आचार्य अपने शिष्य को पुत्रवत मान उसे बौद्ध सिद्धांतों से परिचित कराते थे, ताकि वे 'मेरे' उच्चादर्शों पर खरे उतर सकें। मेरा छात्र होना ही अपने आप में गौरव की बात हुआ करती थी। यहाँ के नामांकित छात्र देश-विदेश में मान-सम्मान के स्वत: ही हकदार हो जाते थे। राजदरबारों में यहाँ के आचार्यों और विद्यार्थियों को विशेष सम्मान मिला करता था।

तंत्र विद्या के अतिरिक्त व्याकरण, न्याय, सृष्टि-विज्ञान, शब्द-विद्या, शिल्प-विद्या, चिकित्सा-विद्या, सांख्य, वैशेषिक, अध्यात्मविद्या, विज्ञान, जादू एवं चमत्कार-विद्या मेरे पाठ्यक्रम के प्रमुख अंग थे। कक्षा की व्यवस्था और उसके समय निर्धारण के लिए अलग से आचार्य नियुक्त थे। अध्यापन का माध्यम संस्कृत भाषा थी।

वर्तमान में सरकार की सकारात्मक सोच एवं पुरातात्विक विभाग के अथक प्रयास से मैं वर्षों गुमनाम रहने के बाद एक बार फिर सुर्खियों में आ गया हूँ। पुरातात्विक खनन से मेरे प्राय: सभी इमारतों की प्राप्ति हो जाने की आशा प्रबल हो गयी है। यहाँ 50 फीट ऊँची एवं 73 फीट चौड़ी इमारत के रूप में प्रधान चैत्य प्राप्त हुए हैं। साढ़े चार फीट की भूमि स्पर्श मुद्रा में भगवान बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई है। पूर्वी और पश्चिमी भवन में पद्मासन पर बैठे अवलोकितेश्वर की कांस्य प्रतिमा प्राप्त हुई है। पद्मपाणि एवं मैत्रेय की प्रतिमा मिली है। कुछ क्षतिग्रस्त सीलें भी प्राप्त हुई हैं। एक सील का सत्यापन 'वीर वज्र' से किया गया है। खुदाई का काम अभी प्रारंभिक अवस्था में है। अनेक महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के प्रकाश में आने की संभावनाएँ बढ़ती जा रही है। दस हज़ार छात्र, एक हज़ार अध्यापक जहाँ रह रहे हों, उनकी भव्यता एवं विशालता के संबंध में कहना ही क्या? वास्तव में कई दृष्टिकोण से मैं एक अद्भुत एवं अलौकिक विश्वविद्यालय था।

तेरहवीं सदी के आरंभ में तुर्कों के आक्रमण के कारण मेरा सर्वनाश हो गया। भ्रमवश किला समझे जाने के कारण ही मेरा यह हस्र हुआ। 'तबक़ात-ए-नासिरी' नामक ग्रंथ में मेरे विध्वंश का जीवंत वर्णन उपलब्ध है। धर्मस्वामी नामक एक तिब्बती लामा ने मेरे पतन का वर्णन अत्यन्त ही मार्मिक तरीके से किया है।

आप जब कभी भी शैक्षणिक परिभ्रमण का मन बनाएँ तो मेरे आँगन में जरूर पधारें ताकि मेरे सोए हुए अतीत, करवट ले रहे वर्तमान एवं बोए जा रहे भविष्य के अदृश्य बीज के बारे में और विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकें।

– पा०पु०वि०स०

शब्दार्थ

अस्मिता	–	इज्ज़त, प्रतिष्ठा
अभेद्य	–	जिसे भेदा न जा सके
कवच	–	शारीरिक सुरक्षा हेतु पहने जानी वाली चीज़
अतिशयोक्ति	–	बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी बात
अतीत	–	बीता हुआ समय
महत्त्वपूर्ण	–	उपयोगी
सानिध्य	–	निकट
सरीखे	–	समान, की तरह
योगदान	–	देन
प्रसिद्ध	–	लोकप्रिय
विक्रमपूर्ण	–	साहसपूर्ण
शील	–	चरित्र
किंवदंति	–	कहा जाता है
विहार	–	भ्रमण करना
आविर्भाव	–	उदय, जन्म
प्रांगण	–	आँगन
समक्ष	–	सामने
समृद्ध	–	सम्पन्न
विशाल	–	बहुत बड़ा
पाण्डुलिपि	–	हाथ से लिखी हुई
म्युजियम	–	संग्रहालय
उत्कृष्ट	–	उत्तम

सानी	–	तुलना
आकांक्षी	–	अभिलाषी, इच्छुक
नवागत	–	नया आया हुआ
पुत्रवत	–	पुत्र की तरह
गुमनाम	–	छिपे रहना
सुर्खी	–	चर्चा
खनन	–	खुदाई
चैत्य	–	भवन
पारमिता	–	सीमा, हद

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. विक्रमशिला नामकरण के संदर्भ में प्रचलित जनश्रुति क्या है?
2. विक्रमशिला कहाँ अवस्थित है?
3. यहाँ के पाठ्यक्रम में क्या-क्या शामिल था?

पाठ से आगे

1. परिभ्रमण के दौरान आप इस स्थल का चयन करना क्यों पसंद करेंगे?
2. इस विश्वविद्यालय को आधुनिक बनाने के लिए आप क्या-क्या सुझाव देंगे?
3. तंत्र विद्या के बारे में आप क्या जानते हैं।?
4. **निम्नलिखित संस्थाओं को उनकी श्रेणी के अनुसार बढ़ते क्रम में सजाइए।**
   (क) विश्वविद्यालय (ख) प्रारम्भिक विद्यालय (ग) महाविद्यालय (घ) माध्यमिक विद्यालय (ङ) प्राथमिक विद्यालय

व्याकरण

संधि : दो वर्णों के मेल से होनेवाले परिवर्त्तन को संधि कहते हैं। जैसे – पुस्तक+आलय = पुस्तकालय। अ+आ = आ।

संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

स्वर संधि : दो स्वर वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्त्तन को 'स्वर संधि' कहते हैं। जैसे – विद्या+अर्थी – विद्यार्थी, आ+अ = आ

व्यंजन संधि : व्यंजन वर्ण के साथ स्वर अथवा व्यंजन वर्ण के मेल से होने वाले परिवर्त्तन को 'व्यंजन संधि' कहते हैं। जैसे – दिक् + गज = दिग्गज

विसर्ग संधि : विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्त्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे– मन:+रथ = मनोरथ

1. पूर्व के बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर संधि विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए :
अतिशयोक्ति, सर्वाधिक, परीक्षा, उल्लेखनीय, पुस्तकालय, शोधार्थी, विद्यार्थी, प्रत्येक, नवागत, उच्चादर्श, नामांकित, अवलोकितेश्वर
2. ऊपर बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का समास बताइए:
अभेद्य, अखण्ड, पथरघट्टा, द्वारपंडित, कुलपति, शिक्षाकेंद्र, देश–विदेश, अलौकिक
3. संधि और समास में अंतर बताइए।

4. राजा का पुत्र–राजपुत्र
विद्या का आलय–विद्यालय
रसोई के लिए घर–रसोईघर

उपर्युक्त उदाहरणों में हमने देखा कि दो शब्दों के बीच एक विभक्ति का प्रयोग किया गया है। विभक्ति लोप के बाद दोनों शब्द मिलकर एक शब्द हो गए हैं। ऐसे ही संयुक्त शब्दों को समास कहते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों में से विभक्ति हटाकर एक नया शब्द बनाइए।

जनों के नायक.....
भूमि का सुधार.....
गृह में प्रवेश.....
शक्ति से हीन.....
देह से चोर.....
लोगों के नायक.....

गतिविधि

1. विक्रमशिला विश्वविद्यालय की भाँति प्राचीन काल में भारत में नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय शिक्षा के केन्द्र थे, उसके सम्बन्ध में शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. सहपाठियों एवं अध्यापकों के साथ विक्रमशिला का परिभ्रमण कीजिए एवं वहाँ प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्रियों की एक सूची तैयार कीजिए।